



Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ भगवान श्रीराम के जन्म की कथा ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ भगवान श्रीराम के जन्म की कथा ॥

त्रेतायुग में अयोध्या नगरी पर राजा दशरथ का शासन था। वे धर्मप्रिय, प्रजावत्सल और पराक्रमी राजा थे। उनकी तीन रानियाँ थीं—माता कौशल्या, माता कैकेयी और माता सुमित्रा। राजा दशरथ के पास सब कुछ था, लेकिन उन्हें संतान न होने का दुःख था।

पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ

संतान प्राप्ति की इच्छा से राजा दशरथ ने महर्षि वशिष्ठ की सलाह पर पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाया। यज्ञ पूर्ण होने पर अग्निदेव प्रकट हुए और उन्होंने राजा दशरथ को दिव्य खीर से भरा पात्र प्रदान किया। राजा दशरथ ने वह खीर अपनी तीनों रानियों में बाँट दी।

समय आने पर चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र और कर्क लग्न में माता कौशल्या के गर्भ से भगवान श्रीराम का जन्म हुआ। माता कैकेयी से भरत और माता सुमित्रा से लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म हुआ।

भगवान श्रीराम के जन्म से पूरी अयोध्या में आनंद छा गया। नगर को सजाया गया, मंदिरों में पूजा-अर्चना हुई और चारों ओर मंगल गीत गाए जाने लगे। प्रजा ने राजा दशरथ को बधाई दी और पूरे राज्य में उत्सव मनाया गया।

भगवान श्रीराम का दिव्य स्वरूप

धार्मिक मान्यता के अनुसार, भगवान श्रीराम भगवान विष्णु के सातवें अवतार थे। उन्होंने पृथ्वी पर धर्म की स्थापना, अधर्म का नाश और आदर्श जीवन का संदेश देने के लिए मानव रूप में अवतार लिया। बाल्यकाल से ही श्रीराम अत्यंत विनम्र, सत्यवादी, आज्ञाकारी और करुणामय थे। उन्होंने अपने गुरुजनों का सम्मान किया और माता-पिता की आज्ञा को सर्वोच्च माना।

श्रीराम के जीवन का उद्देश्य

भगवान श्रीराम के जीवन में अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई—विश्वामित्र के साथ वन गमन, सीता स्वयंवर, वनवास, माता सीता का हरण, हनुमान जी और सुग्रीव से मित्रता, लंका पर विजय तथा रावण का वध। इन घटनाओं के माध्यम से श्रीराम ने सत्य, धर्म, मर्यादा, त्याग और कर्तव्य का आदर्श प्रस्तुत किया।

इसी कारण भगवान श्रीराम को “मर्यादा पुरुषोत्तम” कहा जाता है।

